Dr Priti Ranjan
H.D. Jain College (Ara)
Deptt of History
Topic - Italy Mein fasiwad Ka Utthan
B.A Part - II
paper - IV

इटली में फासीवाद के उत्थान के क्या कारण थे - ?

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् जर्मनी में नाजीवाद का उत्कर्ष हुआ, वहीं दूसरी ओर इटली में फासीवाद का उत्कर्ष हुआ।

~~प्रथमयुद्ध~~ के प्रथम विश्व युद्ध से इटली की धरती घायल हो चुकी थी और उस पर अब अशान्ति का तान्डव नृत्य हो रहा था। जिसके वजह से इटलीवासियों के रूह में बगावत का सैलाब बह रहा था। इटली के कंधों पर कर्जों का बोझ आ गया था। धन जन की हानि तो हुई ही साथ ही देश में अराजकता भी फैल गई थी। आर्थिक क्षेत्र में इटली पंगु हो चुका था। इस ~~कारण~~ कारण इटली में एक नए वाद का माहौल तैयार हुआ जो फासिस्टवाद का कर्णधार मुसोलिनी था। फासिस्टवाद कट्टर या उग्र राष्ट्रीयता का ही एक रूप था।

इसका आगमन इटली की जमीं पर रोमांचक जज्बातों का इजहार करता है। यह किसी भी मायने में महान तानाशाह से कम न था। आर्थिक संकट ने देश की कमर तोड़ दी थी। देश की सामाजिक और नैतिक अशांति की ज्वाला ने देश को बारूद का सुरंग बना दिया था। कैटलबी के शब्दों में "प्रारम्भ में फासिवाद जन्मजात प्रवृति के रूप में उदित हुआ किन्तु बाद में वह एक वाद अथवा एक सिद्धान्त और विशिष्ट प्रकार की शासन प्रणाली के रूप में विकसित हुआ।"

इटली में मुसोलिनी ने प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् बरखास्त सैनिकों का एक संगठन कायम किया। इसका नाम उसने फासिस्ट पार्टी रखा। फासिस्ट पार्टी ने जो आंदोलन चलाया उसी को फासिज्म या फासिस्टवाद कहते हैं। प्रारम्भ में यह अंतप्रेरित प्रकृति के रूप में उदित हुआ। यह प्रजातन्त्र का विरोधी और तानाशाही का परिचायक है।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् असन्तोष और निराशा के वातावरण में फासीवाद का जन्म हुआ। जिसके निम्नलिखित कारण हैं:-

पेरिस के शान्ति से निराशा

——*——*— प्रथम विश्व युद्ध में इटली ने ~~मित्र~~

मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध में भाग लिया था। उसे दक्षिणी मोर्चे पर आस्ट्रिया का सामना करने का कार्य सौंपा गया था। इंग्लैण्ड और फ्रांस की सेना की मदद से जून 1918 ई० में इटली ने आस्ट्रिया की सेना को पराजित किया। जिसके अनुसार उन्हें ट्रीस्ट, आस्ट्रिया, फ्यूम के अतिरिक्त डालमेशिया तटीय क्षेत्र, ब्रेनर के दर्रे तक टिरोल क्षेत्र आदि दिये जाने थे किन्तु विल्सन उन्हें देने से इन्कार कर दिया। इटली को इस में कुछ ही प्रदेश मिले। फ्यूम न मिलने से जनता में असंतोष उत्पन्न हुआ। इस प्रकार 1919 ई० के शान्ति सम्मेलन से इटली के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान को गहरा धक्का लगा।

आर्थिक असंतोष

इटली की आर्थिक स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। उस समय इटली में संसदीय सरकार थी। इस सरकार से वहाँ की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना एकदम संभव नहीं था। इटली पर राष्ट्रीय ऋण बहुत बढ़ गया तथा इसके साथ ही इटली की मुद्रा का मूल्य 70% कम हो गया। वस्तुओं के मूल्य ऊँचे हो गये। बेरोजगारों की संख्या बढ़ने लगी। बाजारों के अभाव में इटली का विदेशी व्यापार भी बहुत कम हो गया। इसी कारण इटली के लोग कहते थे " युद्ध में तो उसने विजय की, परन्तु शांति को खो दिया।"

देश में अव्यवस्था

इटली अव्यवस्था के दौर से गुजर रहा था। जनता परेशान हो चुकी थी। जो सैनिक केपोरेटो युद्ध से पीछे हटे गये थे, उन्हें देशद्रोही घोषित किया गया। इटली निवासी देश को व्यवस्थित देखना चाहते थे। वे एक सरकार को चाहते थे, जो कि देश को व्यवस्थित कर सके।

राष्ट्रीयता पर आघात

उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप का प्रायः प्रत्येक देश अपने आर्थिक हितों की पूर्ति तथा राष्ट्रीय गौरव की वृद्धि के लिए साम्राज्य विस्तार का प्रयास कर रहा था। इस ओर इटली ने भी ट्यूनिस पर अधिकार करना चाहा। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिला। फिर उसके बाद इटली ने अबीसीनिया पर आक्रमण करना चाहा। लेकिन अबीसीनिया ने 1896 ई० में अडोवा के युद्ध में

बड़ी आबादी को साम्यवाद से बचाने के लिए मुसोलिनी ने फासिवाद के मार्ग को प्रशस्त किया।

इटली को पराजित कर दिया। इस पराजय से इटली के राष्ट्रीय सम्मान को आघात पहुँचा। इस आघात से उभरने के लिए ही वह प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से सम्मिलित हुआ था, किन्तु इस बार भी उसे चाहे गये प्रदेशों पर स्वामित्व नहीं दिया गया। अतः इटली के लोग अब एक ऐसी सरकार चाहते थे जो उनकी राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति कर सके तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में इटली को सम्मानजनक स्थान दिलवा सके।

हीगेलवाद का विचार

हीगेल जिसका जन्म जर्मनी में हुआ था, का मानना था कि राज्य संसार की आत्मा है। वह व्यक्ति की महत्ता के स्थान पर राज्य की महत्ता पर बल देता था। हीगेल का सिद्धान्त व्यक्ति को राज्य के एकदम अधीन कर देता है। इसके सिद्धान्तों में और फासिस्ट दल के सिद्धान्तों में काफी समानता थी जिसका लाभ और प्रोत्साहन फासिस्ट दल को मिला।

साम्यवाद का प्रचार

मुसोलिनी की फासिस्ट पार्टी को सर्वाधिक सफलता दिलाने का कार्य साम्यवाद के विस्तृत प्रचार एवं प्रसार ने किया। साम्यवाद के बढ़ते प्रभाव से इटली की जनता डर चुकी थी। सम्राट का अन्त हो, लेनिन के विचारों को लागू किया जाए इस प्रकार के विचार पनपने लगे। इटली के साम्यवादी रूस के बोल्शेविकों की भाँति किसानों और मजदूरों के सहयोग से क्रान्ति करवा कर इटली में सर्वहारा वर्ग के शासन की स्थापना का स्वप्न देखने लगे थे। नवम्बर, ~~1919~~ 1919 के संसद के चुनाव में समाजवादियों को 156 स्थान प्राप्त हो चुके थे।

भविष्यवादी आन्दोलन

~~मैरीनेटी~~ मेहरानिक नामक व्यक्ति जो कि इस आन्दोलन का नेता था के विचार थे कि भूतकाल को भूलकर भविष्य के लिए मार्ग प्रदर्शित करने का ~~पक्ष~~ पक्षधर था। उसके अनुसार इटली को अपने पुराने पराभव को भूलकर नये साम्राज्यवादी बनकर मिटाना चाहिए। उसके (युद्धवादी) आन्दोलन के प्रभाव से फासी पार्टी की विचारधाराओं को प्रोत्साहन मिला।

सरकार की अकर्मण्यता

* इटली की जनता वर्साय - सन्धि की ओर विरोधी थी। जनता में बहुत असन्तोष था, परन्तु तत्कालीन सरकार ने इस असन्तोष को दूर करने के लिए कोई प्रयास नहीं किये। जनता की सामूहिक निर्धनता के कारण देश में समाजवादी दल की बहुत उन्नति हुई। इससे फासिस्टों को अपना विकास करने का पूरा अवसर मिल गया। भाग्य से उसे मुसोलिनी जैसे नेता मिल गया जिसने इटली में फासिज्म की पताका फहराई और इटली में 1922 ई० से 1944 ई० तक फासीवाद का ही बोलबाला बना रहा।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार हम निष्कर्ष में कह सकते हैं कि इटली की दशा निरंतर बिगड़ती जा रही थी और देश के सभी वर्ग के क्योंकि चाहे वे जमींदार हों अथवा कुलीन व्यापारी वकील अध्यापक डाक्टर आदि सभी देश की इस दशा को देखकर चिंतित हो उठे। देश की रक्षा करने के उद्देश्य स्थानों पर सभाओं और भाषण आदि का आयोजन किया जाने लगा। इस प्रकार जिस संगठन का निर्माण किया गया वह 'फोसियो' के नाम से प्रसिद्ध है। इस संगठन के निर्माण में मुसोलिनी का प्रमुख हाथ था।

* देखते ही देखते इटली में त्योरों और क्रांति के चिन्ह स्पष्ट दिखाई देने लगे और ऐसा प्रतीत होने लगा कि देश की दशा एक मात्र क्रांति द्वारा ही संभल सकती है।

अतः संक्षेप में ...